16

विश्वास के लिए यत्न करो (यहूदा 3-25)

हर मसीही के लिए मतभेदों, गलतफहमियों और झगड़ों से निपटने का कोई तरीका निकालना आना आवश्यक है जो कलीसिया में हो सकते हैं। विशेषकर यह प्रचारकों तथा सिखाने वालों के लिए आवश्यक है जो मसीह के कार्य के लिए इतना समय और ऊर्जा देते हैं। यहूदा की बातें कलीसिया के भीतर झगड़ों के लिए संतुलित व्यवहार के लिए हमारे लिए हैं।

उन पर परमेश्वर का दण्ड जो उसका इनकार करते हैं (आयतें 3-7)

यहूदा ने कहा कि वह अपने पाठकों के साथ उद्धार के संदेश को साझा करने का प्रयत्न कर रहा था (आयत 3)। मसीहियत की एक करने वाली महान अवधारणाओं की बात करना और उनके विषय में लिखना आनन्दित करने वाला और विश्वास पैदा करने वाला है। कोई जब प्रेम, छुटकारे तथा उद्धार के महान विषयों पर विचार करके उसे दूसरों को बता सकता है तो वह झूठे शिक्षकों से पंगा क्यों लेना चाहेगा? यहूदा के लिए यह आवश्यकता थी। उसने इस बात को समझा कि मसीह के संदेश से समझौता किया जाता क्योंकि मसीह लोग उस ''सामान्य उद्धार'' का आनन्द खोने के खतरे में थे।

यहूदा भी पतरस की तरह अपने पाठकों को समझाना चाहता था कि जो कुछ उन्होंने आरम्भ से सुना था वह पूर्ण था। प्रेरितों तथा परमेश्वर की प्रेरणा पाए अन्य लोगों के संदेश में उन्हें ''पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया'' विश्वास मिला था (आयत 3; तुलना 2 पतरस 1:3)। उन्हें उन शिक्षकों के प्रति जानकारी की आवश्यकता नहीं थी जो उनमें चुपके से ''आ मिले'' थे (आयत 4; 2 पतरस 2:1 में पतरस ने ऐसे ही वाक्यांश ''उद्घाटन छिपकर करेंगे'' का इस्तेमाल किया)। हम झूठे उपदेशकों से अपने बारे में बताने की उम्मीद नहीं कर सकते। वे धैर्य और आत्मिकता से प्रेम करने वाले स्वर्गदूतों के भेष में आते हैं।

मसीही लोगों के लिए ''डॉक्ट्रिन'' को ''व्यवहारिक मामलों'' से अलग करना आवश्यक है। यीशु ने झूठे नबियों के लिए कहा, ''उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे'' (मत्ती 7:16)। यहूदा ने वही बात कही कि झूठे शिक्षक बनावटी जीवन से अपने आपको दिखाते हैं। उन शिक्षकों का जो उसके पाठकों के विश्वास के लिए खतरा थे अवलोकन उसने इस प्रकार किया: (1) उनका जीवन भक्तिहीन था; (2) उन्होंने परमेश्वर के अनुग्रह को लुचपन में बदल दिया; और (3) वे यीशु मसीह को एकमात्र प्रभु के रूप में मानने से इनकार करते थे (आयत 4)। जितना कठिन चार बार तलाक करने वाले विवाह की सलाह देने वाले को गम्भीरता से लेना है। उतना ही कठिन परमेश्वर की बात करने वाले लोगों को जिनके अपने जीवन भक्तिहीन है गम्भीरता से लेना है। अपोक्रिफा की एक पुस्तक, विवाह के सलाहकार को गम्भीरता से लेना चाहिए। अपोक्रिफा की एक पुस्तक प्रवक्ता ग्रंथ में यह सलाह दी गई हैं ''कुछ अनुभवी लोग बहुतों को शिक्षा देते हैं, किन्तु अपनी आत्मा के लिए किसी काम के नहीं।''[1] मसीही विश्वास

की बड़ी डॉक्ट्रिनों को कभी जीवन से असम्बन्धि केवल बातों से ही नहीं जाना जाता। पतरस की तरह (2 पतरस 2:4-6) यहूदा ने भी यह प्रमाण पाया कि परमेश्वर कालांतर में भक्तिहीनों पर परमेश्वर के न्याय की समीक्षा करके झूठे शिक्षकों का न्याय करेगा। उसके दो उदाहरण तो पतरस के उदाहरण वाले ही हैं यानी परमेश्वर का स्वर्गदूतों को न्याय के बन्धनों के लिए छोड़ देना और सदोम और अमोरा को नष्ट करना (आयतें 6, 7)। यहूदा ने पतरस के जल प्रलय से पहले के संसार की जगह इस्राएलियों के मिस्र में से निकलने के समय परमेश्वर के न्याय की बात की (आयत 5)। तात्पर्य एक ही है। परमेवर ने, मूसा के शब्दों में कहें तो आपने आपको हमेशा न्याय करने वाला परमेश्वर अर्थात ''भस्म करनेवाली आग, वह जल उठनेवाला परमेश्वर'' दिखाया है (व्यवस्थाविवरण 4:24)।

अपनी ''व्यभिचारी ... और पराए शरीर'' के कारण सदोम और अमोरा परमेश्वर के न्याय के अच्छे उदाहरण हैं। ''पराए शरीर'' या ''बिगाड़'' (NIV) उत्पत्ति 19 वाली समलैंगिकता की बात है। जो लोग आज के संसार के खुलेपन का बचाव या उसमें शामिल होने के इच्छुक हैं उनके लिए यहूदा की चेतावनी पर ध्यान देना अच्छा रहेगा कि सदोम और अमोरा ''आग के अनन्त दण्ड में पड़कर दृष्टांत ठहरे हैं'' (आयत 7)। वही परमेश्वर जिसने उन नगरों का न्याय किया था हम सब का न्याय करेगा।

भक्तिहीनता के अक्खड़पन पर परमेश्वर का क्रोध (आयतें 8-16)

यीशु के समय के फरीसी अपनी तंग सोच वाली अकड़ के लिए प्रसिद्ध थे। फरीसियों जैसे अकड़ आम तौर पर पता चल जाती है। अकड़ की कपटी किस्म अपने आपको खुलेपन को सहन करने के नाम में बढ़ाती है। वे उपदेशक जिनका सामना यहूदा ने किया था स्पष्टतया ऐसे ही लोग थे। उन्होंने ''परमेश्वर के अनुग्रह को लुचपन में बदल'' (आयत 4) बदल दिया, ''शरीर को अशुद्ध किया'' (आयत 8) और ''अपनी अभिलाषाओं के अनुसार'' (आयत 16) चलते थे। उन्होंने अक्खड़पन से स्वर्ग के या पृथ्वी पर के किसी भी अधिकार को नकार दिया जो शरीर की इच्छाओं में लगने के उनके अधिकार को गलत ठहरा सकता या उस पर सवाल कर सकता था। खुलेपन को सहने के नाम पर उन्होंने नैतिक तौर पर जीवन के श्रेष्ठ धन के कलीसिया के हर दावे को नकार दिया।

यहूदा ने कहा कि झूठे शिक्षकों ने इस बात का विशेषाअधिकार लिया कि महादूत मिकायल ने भी मूसा की लाश पर शैतान से युद्ध करते समय उसे लेने की हिम्मत नहीं की (आयत 9)। बेशक बाइबल में स्वर्गदूत कई बार मिलते हैं परन्तु मिकायल और जिब्राइल केवल दो जनों का नाम दिया गया है। दानिय्येल की पुस्तक में तीन बार (10:13, 21; 12:1) और प्रकाशितवाक्य में एक बार (12:7) मिकायल का उल्लेख है।

हमें यह समझने में कोई कठिनाई नहीं है कि यहूदा झूठे शिक्षकों की बात कर रहा है, परन्तु उसका उदाहरण अलग बात है। बाइबल का कोई हवाला मूसा की लाश पर शैतान के साथ मिकायल के झगड़े की बात नहीं बताता। परन्तु विभिन्न प्राचीन लेखकों ने एक पुस्तक का हवाला दिया जिसे मूसा की मान्यता कहा जाता है, जिसमें इस घटना का विवरण है। आधुनिक समय में उस प्राचीन पुस्तक का केवल एक भाग ही मिला है, परन्तु स्पष्टतया यह यहूदा की जानकारी

का स्रोत था। बाद में 14 और 15 आयतों में यहूदा ने एक और पुस्तक, हनोक की पुस्तक का उदाहरण दिया, जो पुराने और नये नियम के बीच के समय में लिखी गई थी। यहूदा का बाइबल से बाहरी पुस्तकों का विवरण देना कुछ कठिन प्रश्न खड़े करता है। क्या वह इन पुस्तकों को परमेश्वर की लिखी हुई मानता था? क्या मूसा की लाश पर मिकायल और शैतान के बीच झगड़ा हुआ था? क्या उत्पत्ति 5:21-24 वाले हनोक ने भी ये बातें कहीं थी, जिन्हें यहूदा ने उसकी बताया? बाइबल के विद्वान मसीहियत के आरम्भिक सदियों से ही प्रश्नों पर उलझन में हैं।

कुछ विद्वान मानते हैं कि यहूदा और पौलुस (देखें 2 तीमुथियुस 3:8) दोनों ने ही यहूदी लेखकों की गैर-बाइबली पुस्तकों का उदहरण लगभग वैसे ही दिया जैसे पौलुस ने मूर्तिपूजक कवियों का (प्रेरितों 17:28; तीतुस 1:12)। तर्क दिया जाता है कि आवश्यक नहीं कि पतरस या यहूदा ने उन पुस्तकों का समर्थन किया हो जिनमें से उन्होंने दिया। जैसे यीशु ने दृष्टांतों का इस्तेमाल किया या कोई आधुनिक प्रचारक भारतीय लोक कथाओं का इस्तेमाल करें। वैसे ही यहूदा ने अपने पाठकों को सिखाने के लिए कि वह उन्हें क्या सिखाना चाहता है उस समय के प्रसिद्ध दस्तावेज़ों का इस्तेमाल किया।

कई लोग तर्क की इस बात पर आपत्ति करते हैं कि यहूदा ने हनोक की पुस्तक के शब्द लिए और मूसा की लाश पर झगड़े की बातें वैसे ही लीं जैसे उसने परमेश्वर की प्रेरणा से लिखे पवित्र शास्त्र के शब्द और घटनाओं को लिया। वे तर्क देते हैं प्राचीन पुस्तकों में से यहूदा ने जो भी जानकारी दी हो उसके किसी भी काल्पनिक घटना के उदहरण का अर्थ है कि यह वैसे ही हुई जैसे उसने इसे लिखा।

बाइबल से बाहरी पुस्तकों के यहूदा के उदहरण की समस्या से जूझते हुए हमें उस बात को ध्यान से नहीं हटाना चाहिए जो यहूदा कहना चाह रहा था। झूठे उपदेशक (अधिकर को ठुकराकर) दृढ़ता दिखा रहे थे जो स्वर्गदूत भी नहीं दिखाएंगे। उनके अक्खड़पन से परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए लोगों के लिए उन्हें सिखाना असम्भव बना देता है। यहूदा ने उनकी तुलना पुराने नियम में परमेश्वर के अधिकार का विरोध करने वाले कुख्यात लोगों से की। कैन की तरह (उत्पत्ति 4:1-12), उन्होंने परमेश्वर की नाराज़गी पर बड़े विद्रोह के साथ प्रतिक्रिया दी; बिलाम की तरह (गिनती 22) वे ऐसे शिक्षक थे जिनका संदेश बिकाऊ था; और केरा की तरह (गिनती 16) उनका दण्ड पक्का था।

झूठे शिक्षकों के सचित्र विवरणात्मक विवरण आगे मिलते हैं। मसीही लोंगों के प्रीति भोजों में यह झूठे शिक्षक बिना विवेक के निर्लजता और अक्खड़पन से बैठते, अपने पेट भरते थे (आयत 12)। कुरिन्थुस के कुछ मसीही लोगों की तरह शायद वे साधारण भोजनों अर्थात प्रीति भोजों को, खाने पीने में बदल रहे थे। वे वचन तो करते थे पर कभी धार्मिकता का फल नहीं देते थे। जैसे बिन पानी के बादल होते हैं वैसे ही वह भी हवा के उड़ाए हुए चंचल लोग थे। जैसे पतझड़ में बिना फल के पेड़ होते हैं वैसे ही वह बेजान थे जो दो बार मरे हुए थे। समुद्र की लहरों या तारों में ग्रहों की तरह उनका भी कोई सिर पैर नहीं था। वे सदा के लिए अन्धकार के योग्य ही थे (आयतें 12, 13)।

हनोक की पुस्तक मसीह के जन्म से करीब 200 वर्ष पूर्व कई लोगों द्वारा लिखी गई एक लम्बी पुस्तक है। इसकी पूर्ण रूप से सम्भाली गई प्रतियां केवल इथोपियाई भाषा में हैं, परन्तु

14 और 15 आयतों में यहूदा द्वारा उद्धृत आयत सहित केवल उसका एक तिहाई भाग के लगभग यूनानी भाषा में बचा है। यहूदा के लिए हनोक की पुस्तक का महत्व दुष्टों पर प्रभु के न्याय के सुनिश्चित होने की घोषित बातों के कारण था। वे उसी बात पर ज़ोर देती थीं जो 5 से 7 आयतों में उसने कहा है। "अपने हज़ारों पवित्र जनों" के साथ परमेश्वर उन लोगों का न्याय करने के लिए आएगा जिन्होंने लोगों को जीने के बताए उसके ढंग का विद्रोह किया है।

आयत 16 में लेखक ने तीन दिलचस्प वाक्यांशों के साथ झूठे शिक्षकों का विवरण दिया: (1) वे असंतुष्ट और कुड़कुड़ाने वाले थे; (2) वे अपनी अभिलाषाओं के अनुसार चलने वाले थे; (3) वे अपने मुंह से घमण्ड की बातें बोलते थे। यहूदा ने एक खाका बना दिया कि कलीसियाएं कैसे नष्ट हो सकती हैं। स्वर्ग के इस ओर हमें सिद्ध कलीसिया मिलनी असम्भव है इसलिए कुछ न कुछ शिकायत तो रहेगी ही। कुड़कुड़ाने वाला व्यक्ति न्याय की हर गलती तथा नज़रअन्दाज़ की गई छोटी छोटी बात पर ध्यान देता है। वह दूसरों का नाम लेता है, भाई को भाई के विरुद्ध लड़ाता है। झूठे शिक्षक जिनकी तस्वीर यहूदा ने उतारी वे कुशल दोष निकालने वाले थे।

इसके अलावा वे अपने मन की करने के लिए पूरी तरह से समर्पित थे। दोष निकालकर और शिकायत करके अपनी कमियों से ध्यान हटाया जा सकता है। झूठे शिक्षक शरीर की इच्छाओं को संतुष्ट करने के लिए अपने आपको देते थे, परन्तु सष्टतया वे बहुत से मसीही लोगों को मूर्ख बनाने के लिए जीवन के अपने ढंग को छिपाते थे। वे शेखी मारते और दूसरों की चापलूसी करते थे। उन्होंने सफलतापूर्वक कइयों को अपने पीछे लगा लिया था। यहूदा अपने पाठकों को समझाना चाहता था कि वे लोग वास्तव में क्या हैं।

अपने लोगों के लिए परमेश्वर का प्रेम (आयतें 17-23)

पतरस की तरह यहूदा अपने पाठकों को वे बातें याद दिलाना चाहता था जिन्हें वे आरम्भ से सुनते आए थे (आयत 17)। दोहराना सिखाने में बहुत महत्वपूर्ण है। किसी बात को जानना इस बात की गारन्टी नहीं है कि हम इसे अमल में लाएंगे। लोगों में अपने आपको मिलाए बिना यहूदा ने इन मसीही लोगों से वही याद करने का आग्रह किया जो प्रेरितों ने पहले से बताया था। आयत 18 के शब्द 2 पतरस 3:3 वाले शब्दों से मेल खाते हैं। धुंधले, बेमेल हठ्ठी और झूठे दावों वाले ढंगों से झूठे शिक्षकों ने मसीही लोगों को बांट दिया था। यहूदा ने उन्हें आश्वस्त किया कि उनके क्रूर स्वभाव के पीछे चल रहे थे और आत्मिकता के उनके दावों के बावजूद वे आत्मा से वंचित थे (आयत 19)।

उन कलीसियाओं के लिए जिन्हें यहूदा ने लिखा इस परेशानी से निकलने का क्या इलाज है? यहूदा ने सम्भावनाओं की एक शृंखला में इस प्रश्न का उत्तर दिया है? (1) अपने आपको विश्वास में मज़बूत करो (आयत 20)। हर मसीही अपनी ही आत्मिक भलाई की जिम्मेदारी स्वीकार करे। परमेश्वर संसाधन उपलब्ध करवाता है, परन्तु हर किसी के लिए आत्मिक विकास करने हेतू परमेश्वर द्वारा उसे दी गई वस्तुओं का इस्तेमाल करना आवश्यक है। (2) अपने आपको परमेश्वर के प्रेम में रखो (आयत 21)। एक अर्थ में अपने लोगों के लिए परमेश्वर के सब कुछ समाने वाले प्रेम से कोई बच नहीं सकता। यहूदा ने मसीही लोगों से परमेश्वर का प्रेम

जो उद्धारकर्त्ता में दिखाया गया है आशिषों की मिरास पाने के लिए मसीह लोगों से मसीह के वफ़ादार रहने का आग्रह किया। (3) प्रभु के अनुग्रह की राह देखें (आयत 21)। यहूदा ने कहा कि प्रभु वापस आएगा और विश्वासियों को अनन्त जीवन में ले जाएगा (आयत 22)। (4) संदेह करने वालों पर दयावन्त हों (आयत 22)। कई लोग विश्वास में कमज़ोर हैं और उन्हें प्रोत्साहन की आवश्यकता है। यदि वे जो मज़बूत हैं हर कमज़ोर भाई पर जो अफ़वाहों से खेलता है पर हमला करने से कलीसिया का एक बड़ा भाग जल्द ही खत्म हो जाएगा। (5) जिन्हें आप बचा सकते हैं उन्हें आग में से खींच लाएं (आयत 23)। झूठे शिक्षक कुछ लोगों को गुमराह करेंगे। जिन्हें आप बचा सकते हैं बचा लें। (6) भय के साथ दया दिखाएं (आयत 23)। कमज़ोर व्यक्ति की न्यायपूर्वक डांट और आवश्यक अगुआई जिसकी उसको आवश्यकता है आम तौर पर उसे शत्रु की छावनी में ही अधिक मज़बूत करेगी। पापी से घृणा न करें। उसे बचाएं।

सारांश

यहूदा ने अपने पत्र की समाप्ति नये नियम की सबसे सुन्दर स्तुतिगानों में से एक के साथ की। उसने अपने पाठकों के सामने उन झूठे शिक्षकों के खतरे और बारीकियां रखीं जो उसकी परिचित कलीसियाओं में गड़बड़ कर रहे थे। ये शातिर लोग बहाने से कलीसिया में घुस आए थे और मसीही लोगों में फूट और परेशानी का कारण बने थे। यहूदा ने इन मसीही लोगों से अपने आपको उस मूल संदेश के प्रति फिर से समर्पित होने का आग्रह किया जो उन्होंने प्रेरितों से सुना था। जिससे वे मज़बूत हो जाएं। पत्र की समाप्ति इन शब्दों से की: ‘‘अब जो तुम्हें ठोकर खाने से बचा सकता है, और अपनी महिमा की भरपूरी के साम्हने मगन और निर्दोष करके खड़ा कर सकता है। उस अद्वैत परमेश्वर हमारे उद्धारकर्त्ता की महिमा, और गौरव, और पराक्रम, और अधिकार, हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा जैसा सनातन काल से है, अब भी हो और युगानुयुग रहे। आमीन’’ (आयतें 24, 25)।

टिप्पणी

[1]रोमन कैथोलिक बाइबल में प्रवक्ता ग्रंथ 37:22.